JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

आत्मनिर्भर भारत - सुभाष की दृष्टि में

डॉ.संगीता रॉय
सहायक प्राध्यापिका, हिंदी विभाग
डॉ.अरविंद ब. तेलंग कला, विज्ञान व वाणिज्य
वरिष्ठ महाविद्यालय,निगड़ी,पुणे-44

प्रस्तवना — स्वतंत्रता का अमृत महोत्सव यह अत्यंत ही पवित्र, अलौकिक और महत्वपूर्ण अवसर है। आजादी के समृद्ध महोत्सव भारत वासियों के लिए बड़े ही महत्वपूर्ण एवं अलौकिक स्वभाग्य को लेकर आया है। मेरा मानना है, ना कि आजादी के अमृत महोत्सव के अवसर पर एक नये युग की पटकथा को लिखने का दिन है बल्कि गर्व, गौरवान्वित, स्मरण का भी दिन है। इस आजादी में अनेकों लोगों की त्याग, शहादत, बलिदानी, कुर्बानी समर्पित है, उनको स्मरण करने का भी दिन है। आत्मनिर्भर भारत - सुभाष की दृष्टि के माध्यम से युवाओं को आत्मनिर्भरता और सामाजिक नेतृत्व करने के लिए करने के लिए प्रेरणा प्रदान करते हैं। भारत को आत्मनिर्भर बनाने के लिए हमारे देश के युवाओं को सुभाष की दृष्टि को अपनाने की आवश्यकता है। आजादी का अमृत महोत्सव, ये शुभ अवसर किस भाव और किस संकल्प को लेकर आया इस पर हमारे देश के युवाओं को चिंतन, मनन की आवश्यकता है और इसके साथ - साथ अपने जीवन में आत्मसात करने का अवसर लेकर आया है।

व्याख्या - आजादी के स्वर्ण जयंती के अवसर पर देश भर में मूल्यांकन का कार्य हो रहा है कि ७५ साल में हमने क्या खोया और क्या पाया ? इस मूल्यांकन में राजनेताओं की वह समुदाय भी हिस्सा ले रही है जो कहीं ना कहीं प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से देश में भ्रष्टाचार को पुष्पित फलित और गरीबों की उपेक्षा में लगातार ७५ वर्षों तक शामिल रही है। इस संदर्भ में इल्तेमास हुसैन जी लिखते हैं कि "७५ साल का समय कम नहीं होता, ७५ साल में एक नन्हा बच्चा बुढापे के आंगन में जी रहा होता, एक पीढ़ी उस राह पर कदम रख चुकी होती है जिससे लौटना उसके लिए मुमकिन नहीं रह जाता। अगर हमें अपना मूल्यांकन करना है तो इसके लिए ७५ वर्षों तक प्रतीक्षा क्यों? हमें तो अपने कर्मों का मूल्यांकन हर पल हर दिन करना चाहिए। रोग को चरम सीमा तक पहुंचा कर उसके इलाज की चिंता में डूब जाना मानसिक दिवालियेपन से अधिक कुछ भी नहीं है।"१

हल हो सके न मुल्क के मसले तो क्या हुआ,
कुछ देर जी बहल गया उनकी बातों में।

उपर्युक्त कथनों के आधार पर यह कहना उचित होगा कि मनुष्य अपने जीवन में आत्म मूल्यांकन, आत्मपरीक्षण को स्थान देंगे तभी आत्मनिर्भर भारत का सपना साकार हो पायेगा।
आजादी के अमृतमहोत्सव के अवसर पर क्या नारे लगाने भर से आत्मनिर्भर भारत का सपना साकार होगा? गहन चिंतन, मनन और सोचनीय विषय है। इस गुलाम भारत को आजाद दिलाने में अनेकों महान आत्माओं की शहादत साक्षी है। हमारे देश के अनेकों ऐसे महान सपूतों की; महान आत्माओं की शहादत इस भूमि को आजाद कराने गयी, जिनके रक्त की आहूती से, जिनके रक्त की एक एक बूंद से धरती आज भी नहायी हुई है। चाहे उनका नाम भगत सिंह हो, चाहे उनका नाम सुभाष चन्द्र बोस हो, विस्मिल, राजगुरु, वीर सावरकर, चाहे एक जनेऊ, एक रिवाल्वर और एक गज वस्त्र की अल्पधारी राष्ट्ररक्षा की सम्पत्ति का युगमंत्र गढने वाले चन्द्रशेखर आज़ाद हो। ऐसी कितनी महान आत्माएँ थी जिन्होंने अपने त्याग बलिदान और शहादत की उस सफ़र को पूरा ना किया होता, तो आज हम भारत वाशी अपने अपने चार दिवारी के भीतर

सुरक्षित नहीं रह पाते। यदि उनमें से कोई भी एक महान आत्मा लौटे और हम सभी से ये पूछे कि जिस भारत को आजाद कराने के लिए हमलोगों ने अपने अपने प्राणों की आहूती दे दी, जिस झंडे को सुरक्षित रखने के लिए अंग्रेजों के डण्डों को सहन कर लिया और उसे गिरने नहीं दिया। उस भारतीय चरित्र का,अस्मिता का,स्वाभिमान का रक्षा करने के लिए हमलोग क्या किये और क्या कर रहे हैं? इस प्रश्न का उत्तर शायद ही किसी के पास हो। पर दुर्भाग्य है कि अरबों की आजादी वाले इस देश में यदि हर व्यक्ति से ईमानदारीपूर्वक इस प्रश्न का उत्तर मांगा जाए तो अनेकों ऐसे चेहरे होंगें जो शायद शर्म से झुक जाये। इसलिए झुक जाए कि आज राष्ट्रीयता फैशन में बदल गयी है और आडंबर प्रधान हो गया है। अनेकों की दृष्टि में राष्ट्रीयता का अर्थ सिर्फ इतना रह गया कि कोई बड़ा आयोजन हो तो हम जोर जोर से जय कार लगाये और फिर से भ्रष्टाचार में जुट जाए। इन स्थितियों में सुभाष चन्द्र बोस जी ने जो आत्मनिर्भर भारत का बीज बो कर गये वो कैसे पुष्पित, पल्लवित होगा? इस पर गहन चिंतन और आत्म अमल की पहल हमारे देश के युवाओं और युवतियों के कंधे पर है। हमारे देश के भावी पीढी ही अपने आप को जागृत कर सोने की चिड़िया को नोचने से बचा सकते हैं।
इस संदर्भ में इल्तेमास हुसैन जी लिखते हैं कि "उत्तर प्रदेश के दो (अ) भूतपूर्व राज्यपालों ने राजभवन की साज-सज्जा के लिए स्वीकृत धन से छ: गुना अधिक धन खर्च कर देश के उन आम नागरिकों का मजाक उड़ाया है, जिनके सिर अभी भी छत से नहीं ढके है और जो अपने चूल्हे की आग को जलाए रखने के लिए सुबह से देर रात तक अपना खून और पसीना बेच आटा और ईंधन खरीदते रहते हैं। दरअसल हमारे राजनेताओं और जनप्रतिनिधियों को मितव्ययिता का ऐसा उदाहरण पेश करना चाहिए।जिससे अधिक से अधिक शासकीय धन लोक कल्याणकारी योजनाओं के माध्यम से गरीबों, निराश्रितों, वृद्धों और विधवाओं के सम्मानजन जीवन यापन की व्यवस्थाओं में ईमानदारी से खर्च किया जा सके और उन्हें आत्मनिर्भर बनने के बेहतर अवसर प्रदान कर सकें। परन्तु हमारे देश का दुर्भाग्य है कि यहां कमोबेश हर राजनेता, अधिकारी और कर्मचारी अपने कर्तव्यों की फेरहिस्त उसी दिन फाड़कर फेंक देता है जिस दिन वह कुर्सी सम्हालता है।" २

जब स्वदेशी और विदेशी मूल की बात आती है तो इससे संबंधित प्रश्नों का उत्तर भारत की आत्मा गांव में बस रहे ग्रामीण भाई इस प्रश्न का उत्तर बड़ी सहजता से देते हैं। इस संदर्भ में इल्तेमास हुसैन जी कैसी धूप कैसी छांव में लिखते हैं " भाइया पढे-लिखे की बात तो पढे-लिखे ही जानें। हमारे लिए तो काजू, किसमिस की तरह अटल जी और सोनिया जी दोनों ही परदेशी मूल के हैं। मैंने चौंककर कहा - यह क्या बात हुई? भोला-भाला ग्रामीण बोला भइया हम जो गरीबों को आसानी से मिल जाता है, दुख-दर्द में जो हमारा साथ देता है, हम तो उसे ही स्वदेशी मानते हैं। बाकी सब तो हमारे लिए परदेशी ही है, भले ही वे हमारे सगे-संबंधी क्यों न हो?" ३
उस ग्रामीण के इस सीधे-सपाट कथन ने स्वदेशी मूल के मेरे ज्ञान और इस विषय पर राष्ट्रीय प्रश्न के औचित्य पर एक प्रश्नचिन्ह लगा दिया है।
इस तरह से यहां कहना उचित होगा कि हमारे समाज में चारों ओर आज़ादी के पावन उद्देश्यों को दम तोड़ते देखा जा रहा है और उसमें एक आक्रोश का बीज अंकुरित हो रहा है। समाज में विद्यमान इस विषम परिस्थितियों से आत्म निर्भर भारत का सपना देखने वाले सुभाष चन्द्र बोस जी जैसे उन महान आत्माओं का सपना भी कहीं न कहीं ध्वस्त होता हुआ दिखाई दे रहा है,जो अपने साथ साथ अपने परिवारों के प्राणों की आहूंती दे दी। हमारे देश के जन शक्तियों को फुरसत निकाल कर स्वदेशी और विदेशी मूल के संबंध में चिंतन करना होगा कि त्योहारों की इस भारत माँ की धरती के आलय से लेकर मंत्रालय तक की साज-सज्जा कितना स्वदेशी है? वे भूल जाते है कि आत्म निर्भर भारत बनाने का जो सपनों के बीज उन सभी महान आत्माओं ने बो कर गए कितना फलित हुआ? दिखावे की गलियों में स्वदेशी वस्तुओं की वास्तविकता विदेशी वस्तुओं के आंगन में गौण होता जा रहा है। भारत के इस मिट्टी के संदर्भ में विज्ञान के व्यक्तित्व और साहित्य के व्यक्तित्व का वर्णन इल्तेमास हुसैन जी इस तरह से करते हैं - " न्यूटन ने कहा - सेब धरती पर उसकी गुरुत्वाकर्षण शक्ति के कारण आते हैं वरना ऊपर जाते।
एक व्यंग्यकार ने कहा - सेब पककर पृथ्वी पर इसलिए गिरते हैं क्योंकि भूखा इन्सान है, आकाश नहीं।
लेकिन मैं कहता हूं - सेब पककर पृथ्वी पर गिरते हैं इसलिए क्योंकि परिपक्वता चाहती है ठोस धरातल और ठोर धरती है, आकाश नहीं।"४

ऐसे ही नहीं भारत को सोने की चिड़ियां का बसेरा बनाया,यहाँ महान आत्माएं निवास करती है।आत्म निर्भर बनाने के संकेत से ही सूरज सबसे पहले भारत के धरती पर अपना डेरा डालता है। सुभाष चन्द्र बोस जी का बलिदान देश के प्रति प्रेम, सहयोग, त्याग, समर्पण सिखाती है। अगर देश के हरेक व्यक्ति प्रेम स्वयं से, परिवार से, देश से करना सीख लें, तो सुभाष चन्द्र बोस के आंखों से देखा गया आत्मनिर्भर भारत का सपना सूर्य के साक्षी में साकार होता दिखाई देगा।
सुभाष चन्द्र बोस के जीवन की गाथाएं हमें ये सिखाती है कि ज़िंदगी में कितनी भी बाधाएँ आये, उसे निर्बाध में परिवर्तित कीजिए।

कैनोपी का परिचय और इतिहास -

इस वर्ष २०२२ में नेता जी सुभाष चंद्र बोस की १२५वीं जयंती मनाया गया। इस जयंती के अवसर पर २३ जनवरी,२०२२ को माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा नेता जी की प्रतिमा के होलोग्राम का अनावरण किया गया।
दिल्ली स्थित इंडिया गेट के परिसर में ८ सितंबर,२०२२ को माननीय प्रधानमंत्री जी की उपस्थिति में कैनोपी में नेता जी सुभाष चंद्र बोस की काले रंग की पत्थर की प्रतिमा का अनावरण की गई।
इंडिया गेट के करीब १५० मीटर दूर पूर्व में ग्रैंड कैनोपी है, उसी के अंदर ये प्रतिमा स्थापित की गई।
तेलंगाना में खम्मम नामक जगह से २८० टन वाले एक अखंड काले रंग की ग्रेनाइट को खुदाई करके लाया गया। इस पत्थर को लाने के लिए १४० पहियों वाले १०० फीट का एक ट्रक को विशेष तौर पर निर्मित किया गया। इस अखंड काले रंग की एक ही पत्थर का टुकड़ा से नेता जी की प्रतिमा बनायी गई।वर्तमान में इस प्रतिमा का भार ६५ टन (६५००० किलो ग्राम) है।
छब्बीस हजार मानव घंटों के गहन कलात्मक श्रम के बाद इस काले रंग की पत्थर को एक मूर्ति का स्वरूप भारत माँ के वीर सपूत नेताजी सुभाष चंद्र बोस के रूप में उभारा गया और इस मूर्ति की सबसे खास बात यह है कि इसका आवरण हस्त शिल्प के माध्यम से बनाया गया।
एक-एक कारीगरों ने अपने हाथों से इसे निर्मित किया है,किसी भी मशीनी प्रक्रिया का सहयोग नहीं लिया गया।
प्रधानमंत्री की उपस्थिति में क्रांतिकारी नेता, नेताजी सुभाष चन्द्र बोस के सम्मान भारत सरकार ने जिस कैनोपी में ब्रिटेन के राजा 'जार्ज द फिफ्थ (जार्ज) की प्रतिमा लगी हुई थी अब वहाँ नेता जी की एक बहुत बड़ी विशाल प्रतिमा को स्थापित किया गया है।साल १९६८ में जार्ज पंचम की प्रतिमा इस कैनोपी से हटा दिया गया था।
मैसूर स्थित मूर्तिकार अरुण योगीराज और उनके समूह के शिल्पकारों ने नेताजी की प्रतिमा का स्वरूप गढ़े। ये मूर्तिकार वही हैं जिन्होंने साल २०२१ में आदि शंकराचार्य की १२ फीट की प्रतिमा बनायी थी जो केदारनाथ में स्थापित की गई।
मूर्तिकार अरुण योगीराज द्वारा निर्मित नेताजी बोस की प्रतिमा के आकार का वर्णन किया जाए तो कैनोपी की सीमा करीब ६०० फीट लंबा है, उसके अंदर २८ फीट लंबा नेता जी की प्रतिमा स्थापित की गई है।
२३ जनवरी २०२२ नेताजी की १२५ वीं जयंती एवं पराक्रम दिवस के अवसर पर नेताजी के सम्मान में केंद्र सरकार ने आपदा प्रबंधन के क्षेत्र में भारत में व्यक्तियों और संगठनों द्वारा प्रदान किये गये।
अमूल्य योगदान और निस्वार्थ सेवा को पहचानने और सम्मानित करने के लिए वार्षिक सुभाष चंद्र बोस आपदा प्रबंधन पुरस्कार प्रदान करने की शुरुआत की गई। इसके अलावे कोलकाता के विक्टोरिया में मेमरोरियल और लाल किला में समर्पित संग्राहालय में नेताजी से जुड़ी हुई स्मृतियां वहां प्रदर्शित किये जायेंगे।
मूर्तिकार अरुणयोगीराज जब नेताजी की प्रतिमा को गढ़ रहा होगा, तो उनके मनोभाव किन किन पहलुओं को स्पर्श कर रहा होगा, स्वरचित इन पंक्तियों के माध्यम से बताने का प्रयास कर रही हूं।

मूर्तिकार अरुण योगीराज,अखंड पत्थर को
जब नेताजी बोस की प्रतिमा के रूप में गढ़ रहा होगा,
अपने औजारों और अपने आप को धन्य समझा होगा,
नेता जी की छवि शिल्पकार को,
अखंड पत्थर अंकन करने में बाधा डाला होगा,
मनोवृतियों को गहन सोच में डाला होगा,
नेता जी के छायाचित्र को कईबार स्पर्श किया होगा,
मूर्तिकार की अँगुरी भी अपने आप को धनवान समझा होगा,
क्रन्तिकारी वीरों की सुनें,अनसुने कथा से रू-ब-रू हुआ होगा,
परतंत्रता के इतिहास में भी डुबकी लगाया होगा,
नेता जी के भारत भ्रमण का चलचित्र उनके आखों को खूब भाया होगा,
स्वाधीन भारत में नेताजी के स्वरूप गढ़ कर आनंदित हुआ होगा।

सुभाष चंद्र बोस के व्यक्तित्व एवं जीवन का संक्षिप्त परिचय -

नेताजी का जन्म २३ जनवरी १८९७ को उड़ीसा के कटक में हुआ। इनके माता प्रभावती दत्त बोस और पिता जी जानकी नाथ बोस थे। इन्होंने अपनी रेवेनशॉ कॉलेजिएट स्कूल से अपनी स्कूली शिक्षा प्राप्त की।
उच्च शिक्षा हेतु प्रेसीडेंसी कॉलेज कोलकाता चले गए। वहाँ वे एक प्रोफेसर की पिटाई कर दी थी और उग्र राष्ट्रवादी गतिविधियां से सम्मिलित होने के कारण इनको कॉलेज से निष्कासित कर दिया गया।
उसके बाद नेताजी कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय चले गये।
सन १९१९ में कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में जब नेता जी वहाँ इंजीनियरिंग पढ रहे थे तब उनके मनोवृत्ति में एक विचार कौंधा कि अगर भारतीयों की सेवा करनी है तो उन जगहों पर ही जाकर करनी है जहाँ उनपर अत्याचार हो रहा है। १९१९ में

भारतीय सिविल सेवा का हिस्सा बनते हैं और जल्द ही त्याग पत्र दे देते हैं। नेताजी का मानना था कि मैं ऐसी व्यवस्था का हिस्सा नहीं हो सकता जो भारतीयों का रक्त चुसती है, भारतीयों को गुलाम बनाने का प्रयास करती है। और आगे उन्होंने 'अंग्रेजों से आजादी' को ही अपने जीवन का लक्ष्य बना लेते हैं। नेताजी, विवेकानंद और चितरंजन दास जी से प्रभावित थे। विवेकानन्द जैसे त्यागी महान पुरुषों के लिए नेताजी के मन में बड़ा आदर था।
आध्यात्मिक गुरु के रूप में विवेकानंद और राजनीतिक गुरु के रूप में चितरंजन दास को स्वीकार करते हैं। आगे चलकर चितरंजन दास की स्वराज पार्टी का नेता जी सदस्य बन जाते हैं। सुभाषचंद्र बोस साल १९२१ में स्वराज पार्टी का ही समाचार पत्र फॉरवर्ड का संपादक बन जाते हैं।

अपने बंधुओं के लिए अपार स्नेह, उनके दीन तथा दरिद्रावस्था के लिए निरंतर दुःख अनुभव करना, अपने ध्येय के लिए तड़प, अपना सब-कुछ अपने बंधुओं के सुख के लिए अर्पण कर देने की उनकी उदार तथा त्यागी वित्ति इत्यादि अद्‌भुत गुण सुभाषचंद्र बोस के व्यक्तित्व के विशेष पहलू थे।
"अंग्रेजों की प्रशंसा करनेवाले एक शिक्षक से सुभाषचंद्र बोस का एक बार विवाद हो गया। परिणामस्वरूप उनका नाम स्कूल से काट दिया गया। तदपि किसी प्रकार उनको मैट्रिक की परीक्षा में बैठने की अनुमति मिल गई। आश्चर्य की बात है कि सुभाषचंद्र बोस उस वर्ष की मैट्रिक परीक्षा में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हो गए।"९ नेताजी एक ऐसे व्यक्तित्व थे जिन्होंने अपने क्रन्तिकारी के बल पर स्वाधीनता दिलाने में अहम भूमिका निभाए और बहुत हद तक सफल भी हुए ।
"मात्र २७ वर्ष की आयु में ही वे कलकत्ता म्युनिसिपैलिटी के मुख्य अधिकारी बन गए थे । सुभाषचंद्र बोस अपने जीवन में विभिन्न आंदोलनों के सिलसिले में ग्यारह बार कारागार में भी गए थे। हरिपुरा कांग्रेस के अवसर पर उन्हें अत्यधिक बहुमत के आधार पर कांग्रेस के अध्यक्ष पद पर निर्वाचित घोषित किया गया था।"१०
कठिनाइयों का सामना करना ऐसा माने कि उनके रक्त में ही मिश्रित था। "शत्रु को मारने की अपेक्षा शत्रु से मर खाना, तलवार और अन्याय शस्त्रास्त्र चलना सीखने की अपेक्षा चरखा चलना सीखना, अपराधियों को बंदीगृह में भेजने की अपेक्षा स्वयं ही बंदी बन जाना आदि-आदि ऐसी बातों से क्या स्वराज की प्राप्ति हो सकती है?" ११ ऐसे प्रश्न उन्होंने कई बार स्वयं से ही किया। नेता जी एक ऐसे व्यक्तित्व थे जिन्होंने अपने क्रन्तिकारी के बल पर स्वराज दिलाने का प्रयास किये और इसमें बहुत हद तक सफल भी हुये।

निष्कर्ष

महान क्रांतिकारी सुभाषचंद्र बोस देशहित में अपने जीवन का सर्वस्व अर्पित करके, रक्त के एक एक बूंद से इस देश को सिंचित किया है। देश को स्वाधीन कराने के लिए उन्होंने पूरी दुनिया का भ्रमण किया।
जिनका जीवन उड़ीसा के कटक की धरती से लेकर कोलकाता, बर्लिन और सिंगापुर तक का सफर तय करके भारत माता के संतानों को लेकर उन्होंने स्वदेश हित में वृहद अभियान चलाया और काफी हद तक
सफल भी हुये। उनका जीवन दर्शन युवा वर्ग को आत्मनिर्भर भारत बनाने में अधिक बल प्रदान करेगा।
उनकी निष्ठा, लगन, त्याग,बलिदान,कार्यक्षमता युवा समाज को आत्मनिर्भर भारत बनाने में प्रेरणादायक सिद्ध होगा। राष्ट्रभक्ति की भावना उनके दिल में इतने पावन भाव से भरा था कि वो अपने देश रोते बिलखते की दुनिया से निकालकर खुशियों का संसार दिया।

सन्दर्भ –

१) कैसी धुप कैसी छांव - इल्तेमास हुसैन, पृष्ठ २०४
२) कैसी धुप कैसी छांव - इल्तेमास हुसैन, पृष्ठ २०५
३) कैसी धुप कैसी छांव - इल्तेमास हुसैन, पृष्ठ २० ६
४) कैसी धुप कैसी छांव - इल्तेमास हुसैन, पृष्ठ २० ९
५) Drishti IAS on YouTube
६) Drishti IAS on YouTube
७) awgp on You Tube
८) Drishti IAS on YouTube
९) पुरुषोत्तम नागेश ओक - भारत का द्वितीय स्वातंत्र्य समर (१९४३-४५)आज़ाद हिन्द फौज की कहानी) पृ. २४५
१०) पुरुषोत्तम नागेश ओक - भारत का द्वितीय स्वातंत्र्य समर (१९४३-४५)आज़ाद हिन्द फौज की कहानी) पृ. २४६
११) पुरुषोत्तम नागेश ओक - भारत का द्वितीय स्वातंत्र्य समर (१९४३-४५)आज़ाद हिन्द फौज की कहानी) पृ. २४६